R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 08 अंक : 06 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 सितम्बर 2022 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

सद्भावना शिविर

आज के दौर का बेहद जरुरी आयोजन

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

22 से 26 अगस्त तक अनासक्ति आश्रम कौसानी में आयोजित सद्भावना शिविर अपने मकसद में पूरी तरह कामयाब कहा जायेगा। उत्तराखण्ड सद्भावना यात्रा के दौरान आपसी संवाद में बार-बार युवाओं के साथ संवाद करने की मांग व आवश्यकता महसूस की गई थी। उसी क्रम में यह शिविर आयोजित किया गया। शिविर में हिमालय के सम्मुख खड़ी पर्यावरणीय आपदा के सवाल, शिक्षा, स्वास्थ्य, पलायन, पर्यटन, वन एवं वनाधिकार छोटी नदियां व नौलों के हालात पर चर्चा की गई। राज्य के अलग-अलग जिलों से पहुँचे लगभग 45 युवा, शिविर में भागीदार बने। शिविरार्थियों ने वर्तमान दौर में सद्भावना के विचार को सशक्त करने के साथ-साथ उसके प्रचार प्रसार हेतु गहन मन्थन किया। शिविर के दौरान जहाँ एक तरफ आजादी के आन्दोलन, देश का संविधान, लोकतन्त्र व सद्भावना जैसे विषयों पर गम्भीर चर्चाएं हुई वहीं दूसरी ओर हिमालय के सम्मुख खड़ी पर्यावरणीय आपदा के सवाल, शिक्षा, स्वास्थ्य, पलायन, पर्यटन, वन एवं वनाधिकार छोटी नदियां व नौलों के हालात पर भी जोरदार बहस हुई।

शिविर के दौरान गाँधी विचार सभी चर्चाओं के केन्द्र में रहा। समय समय पर जनगीतो के गायन व सामूहिक खेलों ने शिविर की रोचकता को बनाये रखा। रात्रि भोजन उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी प्रतिभागियों ने खूब आनन्द लिया। शिविर के संयोजक भुवन पाठक ने बताया कि इस तरह के आयोजन समय-समय पर आयोजित किये जायेंगे, इस क्रम में अगला आयोजन नवम्बर माह में आयोजित करने की योजना है। शिविर में सर्वोदय मण्डल, उत्तराखण्ड के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन की पुस्तक 'पहाड बेच डालो' का विमोचन भी किया गया। शिविर हेतु गांधी स्मारक निधि, उत्तर प्रदेश ने अनासक्ति आश्रम का भवन एवं सभागार निःशुल्क उपलब्ध कराया। शिविर में इस्लाम हुसैन, गोपाल भाई सद्भावना, बीजू नेगी, मोहन काण्डपाल, तरूण भाई, ईश्वर भाई, अजय कुमार के साथ-साथ लगभग 45 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

सद्भावना शिविर की स्मृतियाँ

आज शिवर से आये एक दिन पूरा हो चुका है और अभी भी मन शिविर से वापिस आने को राजी नही है। मन अभी भी कौसानी में बिताये 5 दिवस की स्मृतियों में ही रमण कर रहा है। यह चाहता है कुछ और पल उन नए-पुराने मित्रों के साथ बिताना जो सद्भावना शिविर में मिले और पुनः चाहता है उस सभागार में सबके साथ बिताए उस समय को जीना, यह फिर उन सभी मित्रों द्वारा बताये उनके निजी अनुभवों को सुनना चाहता है, यह दोबारा श्वेता दी के कबीर भजन और गोपाल दा के द्वारा गाए 'गिर्दा के लोकगीतों और दैणा-हुयेण' को सुनना चाहता है यह चाहता है फिर एक बार भोजन करना तत्पश्चात देर रात तक सभागार में पहाडी व हिन्दी गीतों को गाना व उनपे थिरकना। देखना चाहता है फिर सभी के साथ बैठ एक शॉट फिल्म और फिर आखिर में सुनना चाहता है बिजुदा के मुख से 'पोंछ कर अश्क अपनी आँखों से' गीत।

मनोज जोशी

हमारी पाती

श्रमयोग पत्र के आठवें वर्ष का छठा अंक लेकर हम आपके बीच हैं। श्रमयोग समुदाय, रचनात्मक महिला मंच, महिला समूहों व बाल मंचो में श्रमयोग पत्र निरन्तर पढ़ा जा रहा है। श्रमयोग समुदाय के सदस्य, महिलायें व बच्चे पत्र में निरन्तर लिख रहे हैं। इस तरह पढ़ने-लिखने की संस्कृति बन रही है और हम सब मिलकर सामुदायिक पत्रकारिता की मुहीम को लगातार मजबूत कर रहे हैं।

अगस्त माह में श्रमयोग के कार्यक्षेत्र में अनेक गतिविधियाँ हुई। श्रमयोग के 05 साथियों ने अनासक्ति आश्रम कौसानी मे आयोजित 4 दिवसीय सद्भावना शिविर मे प्रतिभाग किया। हेलंग एकजुटता मंच के आव्हान पर 1 सितम्बर को नैनीताल में हुई रैली व आयुक्त को ज्ञापन देने के कार्यक्रम में हमारे साथी शामिल रहे। रचनात्मक महिला मंच का सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र देवायल में स्वास्थ सुविधाओं का अभाव, घर-घर नल योजना के अन्तर्गत नलों में पानी न आना, क्षेत्र के कई गांवों के पक्की सड़क से जुड़े होने के बाद भी उन गांवों तक गैस सिलेण्डर की गाड़ी का न आना, आन्तरिक मोटर मार्गों का बुरी तरह क्षितग्रस्त होना जैसे मुद्दों पर ज्ञापन तैयार कर हस्ताक्षर अभियान जारी है। मंच द्वारा किचन गार्डन हेतु अपने सदस्यों को उपलब्ध कराये जा रहे बीजों पर चर्चा हुई, श्रम-उत्पाद का भुगतान हुआ, बाल मंचों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

अनासक्ति आश्रम कौसानी मे आयोजित 4 दिवसीय सद्भावना शिविर ऊर्जा व विचार की ताकत देने में सफल रहा। शिविर के दौरान सद्भावना के विचार, समाज में अहिंसा, प्रेम, बन्धुत्व व एकता, राष्ट्रीय आन्दोलन, संविधान, लोकतन्त्र, जल-जंगल-जमीन, खेती-बाड़ी, पर्यावरण, शिक्षा, पर्यटन, पलायन, सामुदायिक जीवन इत्यादि पर गम्भीर चर्चाएं हुई।

राज्य में हेलंग एकजुटता मंच के बैनर तले चल रहा आन्दोलन निरन्तर मजबूत हो रहा है। इसमें राज्यभर की आन्दोलनकारी ताकतें एकजुट हो रही हैं। वक्त की जरुरत है कि आन्दोलन की मजबूती के लिये सामूहिक नेतृत्व को और मजबूत किया जाय। आन्दोलन के लिये व्यापक चर्चा के द्वारा अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को समेटते हुए एक विस्तृत माँग पत्र बने।

साथियो, श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। हम श्रमयोग पत्र का संचालन मुख्य रुप से पाठकों द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹ 100 (डाकखर्च सहित) व आजीवन सदस्यता ₹ 1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। बीते वर्षों में आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

हेलंग की घसियारियों को न्याय के लिये प्रदर्शन

'जंल-जंगल-जमीन हमारी, नहीं सहेंगे धौंस तुम्हारी' नारे से गूंजा नैनीताल

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

नैनीताल, 1 सितम्बर, हेलंग की घसियारियों को अब तक न्याय न मिलने से आक्रोशित राज्यभर के आन्दोलनकारियों ने नैनीताल पहुँच कर जलूस निकाला व आयुक्त को ज्ञापन सौंपा। हेलंग एकजुटता मंच के बैनर तले आयोजित प्रदर्शन में राज्यभर से आये आन्दोलनकारियों ने कहा कि जब तक हेलंग की घसियारियों को न्याय नहीं मिल जाता आन्दोलन जारी रहेगा।

इस दौरान 'लड़ना है भाई ये तो लम्बी लड़ाई है, 'जैंता एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में' जैसे अनेक जन गीत गाये जा रहे थे। प्रदर्शनकारियों ने 'जंल-जंगल-जमीन हमारी, नहीं सहेंगे धौंस तुम्हारी', 'हेलंग की घसियारियों को न्याय दो' जैसे नारों से नैनीताल को गुँजा दिया।

मल्लीताल पंत पार्क से शुरु हुआ जलूस आयुक्त कार्यालय पहुँच कर सभा में बदल गया। ज्ञापन सौंपने से पूर्व हुई सभा में वक्ताओं ने कहा कि इस मामले में चमोली के जिलाधिकारी को तत्काल उनके पद से हटाने, वन पंचायत की तथाकथित स्वीकृति को रद्द करने, टीएचडीसी के विरूद्ध मलवा नदी में डालने और पेड़ काटने के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने, व हेलंग प्रकरण की जांच उच्च न्यायालय के सेवारत अथवा सेवानिवृत न्यायाधीश से करवाने की अपनी माँगो पर कायम हैं। वक्ताओं ने कहा कि यदि सरकार ने माँगे नहीं मानी तो आन्दोलन तेज किया जायेगा। इस दौरान राज्य में वनाधिकार कानून लागू करने व वन पंचायतों में निर्णय का अधिकार पूरी तरह ग्रामीण जनता को सौंपे जाने की माँग भी की गई।

देहरादून में भी सौंपा ज्ञापन

हेलंग में हुए महिला अपमान के विरोध में हेलंग एकजुटता मंच और भू-कानून संयुक्त संघर्ष मोर्चा ने देहरादून में गांधी पार्क से आयुक्त गढ़वाल मंडल कार्यालय तक जुलूस निकाला। गांधी पार्क में मसूरी-खटीमा के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद गढ़वाल मंडल आयुक्त कार्यालय तक जुलूस निकाला गया। आयुक्त को सौंपे ज्ञापन में कहा गया कि चमोली जिले के हेलंग गांव में जंगल से घास काट कर ला रही महिलाओं के साथ पुलिस प्रशासन के दुर्व्यवहार को प्रदेश की मातृशक्ति बर्दाश्त नहीं करेगी।

ज्ञापन के माध्यम से मांग की है कि मामले में गंभीर आरोपों की जांच रिटायर्ड न्यायाधीश की अध्यक्षता में गठित उच्च स्तरीय जांच कमेटी से कराई जाए। इसके साथ ही जल जंगल और जमीन पर स्थानीय जनता को निर्णय में भागीदारी का अधिकार हो, इसके लिए आवश्यक कदम उठाने की माँग की गई।

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- ढाई आखर – पृष्ठ 3
- कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट – पृष्ठ 6
- सद्भावना यात्रावृतान्त – पृष्ठ 7
- मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-8 – पृष्ठ 8
- हमने 'प्रतिज्ञा' बाल मंच बनाया – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

दक्षिण-पश्चिम मानसून सक्रीय है। मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य में 01 जून से 31 अगस्त तक औसत 866.6 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। जो सामान्य से लगभग 12 प्रतिशत कम है। सितम्बर माह में पर्याप्त वर्षा होने की सम्भावना व्यक्त की गई है।

सितम्बर माह-सावधानियाँ

वर्षा ऋतु में जल स्रोतों में आ रहे जल की भौतिक अवस्था (रंग, गंध इत्यादि) बदलने पर जल को उबाल कर व कपड़ छान कर पियें। पर्याप्त मात्रा में पानी पियें। बाहर से घर वापस लौटने पर साबुन से हाथों को धोयें। अपने आस-पास मच्छरों को न पनपने दें।

सितम्बर माह में विशेष दिवस

05 सितम्बर	–	शिक्षक दिवस
08 सितम्बर	–	विश्व साक्षरता दिवस
11 सितम्बर	–	विनोबा जयंती
14 सितम्बर	–	हिन्दी दिवस
23 सितम्बर	–	र0 म0 मं0 त्रैमासिक बैठक
29 सितम्बर	–	टीम श्रमयोग बैठक दिवस
30 सितम्बर	–	श्रम सखी बैठक दिवस

सम्पादकीय

जगदीश, हम मुँह दिखाने के लायक नहीं

हमें शर्म आती है जगदीश कि हम ऐसे समाज में रहते हैं जहाँ तुम्हें महज इसलिये मार दिया गया कि तुमने अपनी जाति से बाहर विवाह करने की जुर्रत की। हम मुँह दिखाने के लायक नहीं हैं। अभी कुछ दिन पहले ही तो हमने आजादी का जश्न मनाया था। तुम भी झण्डा लेकर सड़कों पर आये होगे, नारे लगाये होंगे। तुमने क्यों समझा कि तुम आजाद हो? सब गलती तुम्हारी है। तुम पेशे से प्लम्बर थे, चुपचाप बाकी लोगों की तरह घुट-घुट कर जी लेते। तुमने राजनैतिक चेतना क्यों पाई? तुम्हारी हिम्मत, कि तुमने एक नहीं दो-दो बार विधायक का चुनाव लड़ लिया। आखिर तुमने बदलाव का स्वप्न क्यों देखा? जाति की बेड़ियों को उखाड़ फेकने की हिम्मत क्यों की। तुम्हें इस बात का इल्म था कि इसकी कीमत तुम्हें जान देकर चुकानी पड़ेगी।

तुम्हें इस बात का बिल्कुल इल्म नहीं था जगदीश। अन्यथा तुम भिकियासैण की बाजार में ऐसे नहीं पकड़े जाते। शायद तुम उच्च अधिकारियों से सुरक्षा की गुहार लगाकर निश्चिन्त हो गये थे। तुम समझ रहे होगे कि तुम आजाद मुल्क में हो, तुम्हारी मर्जी के खिलाफ कोई तुम्हारा अपहरण कैसे कर सकता है। तुम क्यों भूल गये कि स्कूलों में मध्याहन भोजन के दौरान दलित बच्चों व भोजन माताओं का उत्पीड़न, गाँवों में छुआछूत, बारातों के दौरान दलितों पर छींटाकशी व जोर जबरदस्ती, आम दिनों में भी जाति सूचक शब्दों द्वारा दलितों का उत्पीड़न, कॉलोनियों में प्लॉट लेने पर दलितों से गाली-गलौज जैसी खबरें बार-बार आ रही हैं। तुम क्यों भूल गये कि कि हमारे समाज सड़े हुए हैं और आजादी के 75 वर्षों के बाद भी अपना सामन्ती गुण व घिनौनी सोच को नहीं छोड़ पाये हैं। आधुनिक, पढ़े-लिखे व उन्नत होने के हमारे दावे खोखले व झूठे हैं।

अब बहुत प्रलाप होगा जगदीश। अखबारों के पन्ने तुम्हारी हत्या की खबरों से भरे हुए हैं। प्रैस कान्फ्रेन्स, ज्ञापन इत्यादि की तैयारियाँ चल रही हैं। इस सबके बीच तुम्हारी पत्नी गीता व माता-पिता का क्या हाल होगा, सोच कर रोंगटे खड़े हो रहे हैं। माफ करना जगदीश, आवेश में कुछ ज्यादा लिखा गया। तुमने सपने देखने का साहस किया, तुम्हारे कृत्य प्रेम का सन्देश दे रहे थे, तुमने समाज पर भरोसा किया, बहुत सारे लोग तुम्हारे साथ थे, तुम्हारे मददगार थे। तुम्हारे द्वारा किया गया साहस, प्रेम व भरोसा रोशनी बनकर कई लोगों को राह दिखायेगा।

जगदीश, इतना हम कहना चाहते हैं कि तुम्हारी तरह समाज में समता व समानता के पक्ष में खड़े लोगों की जमात छोटी व कमजोर नहीं है। हम मिलकर पूरी ताकत से लड़ेगे। तुम्हारे सपनों को जियेंगे। तुमने जो रास्ता चुना था वह बिल्कुल सही था। तुम हमारे बीच हमेशा जिन्दा रहोगे जगदीश।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

गाँवों में लोग जमीन बेचने लगे हैं

निर्मला देवी
अध्यक्षा, रचनात्मक महिला मंच, सल्ट

साथियों नमस्कार।

आशा करती हूँ कि आप अपने घर-परिवार के साथ कुशल होंगे। अगस्त माह की बैठकें कलस्टर इंचार्ज व श्रम सखियों ने अच्छी तरह से की। सल्ट में रचनात्मक महिला मंच का 2014 से शुरु हुआ सफर बहुत अच्छा चल रहा है। गाँवों में महिलाएँ जागरूक हो रही हैं। अपने हक की लड़ाई लड़ना सीख रही हैं।

चिन्ता की बात है कि आने वाली पीढ़ी गाँव से पलायन कर रही है। केवल वही लोग गाँव में है जिनका अपने गाँव व खेती से लगाव है। लॉकडाउन में बाहर रह रहे लोगों के आने से गाँवों में रोनक सी हो गई थी, कोरोना के कम होन से फिर से लोग रोजगार के लिए पलायन हो गये, फिर से वही सूनसानी हो गई, बुजुर्ग ही घर में रह रहे हैं। क्योकि पहाड़ में रोजगार नही है। घर परिवार का खर्चा कैसे चलेगा। सभी का सोचना यही है कि पहाड में यदि रोजगार होता तो हम लोग कभी बाहर नहीं जाते। गाँवों में लोग जमीन बेचने लगे हैं। यदि बाहरी लोग गाँव में आ गये तो गाँवों वालों को गाँव से बाहर होना पड़ेगा। क्योंकि मेन बाजार में काफी जमीने बिक गई हैं। जानवरों का खतरा तो है। बाघ, सुवर बन्दर रोज के हैं। लेकिन हम लोग खेती बंजर छोड़ेगे तो जंगली जानवरों तो घर के पास आना ही है। हमें थोडा बहुत ही सही पर खेती को छोड़ना नहीं है। इस साल बारिश भी अच्छी नहीं हुई। कुछ परिवारो की लौकी की बेल पीली पड़ गई हैं। लेकिन किचन गार्डन में बैगन, भिन्डी बहुत अच्छी हुई है। समूहों में कई सदस्याओं ने बैंगन बेचे भी है। मैं यही कहुँगी की हम किसान थे, किसान है, किसान बन कर रहना है और अपनी जन्मभूमि पहाड़ को कभी नहीं छोड़ना है।

मासिक बैठकों में समय निकाल कर लगन से बैठें

धनेश्वरी देवी
अध्यक्षा, रचनात्मक महिला मंच, नैनीडांडा

सभी साथियों को मेरा नमस्कार। मैं धनेश्वरी देवी रचनात्मक महिला मंच नैनीडाडा की अध्यक्षा। मैं आप सभी बहनों को कुछ संदेश देना चाहती हूँ। क्योंकि अब हमारे मंच में बहुत सी नई बहनें जुड़ रही हैं, मेरा आप सभी समूह की बहनों से निवेदन है कि मासिक बैठक में अधिक से अधिक समय निकाल कर आराम से और लगन से बैठें। ऐसा न हो कि कोई भी महिला बैठक के दिन यह बोले कि मुझे ये काम पड़ा है, मुझे नहीं आना है, घास लकड़ी लेने या बकरी चराने जाना हैं। समूह में यह सब चीजें ठीक नहीं लगती। एक दिन का समय होता है साथ बैठने का, नई जानकारी मिलने का, उस दिन भी हम लोग नहीं आते और न अपनी परेशानी को लेकर काम करते हैं। मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि बैठक में परिचय देते समय अपने नाम लेने में हिचकिचाएँ नहीं और अपना परिचय ठीक से दें। समूह की सदस्यों से निवेदन है कि आप बैठक के लिए समय निकालें। मैं आप सबको सूचित कर रहीं हूँ कि हमारा महोत्सव आने वाला है, हम सबको मिलकर उसकी तैयारी करनी है। आज कल हमारी ग्राम सभा में मनरेगा का काम चल रहा है। हम सभी बणासी, सतखोलू के लोग मिलकर सरोवर बना रहे हैं। मैंने अदरक और हल्दी की खेती कर रखी हैं तथा साथ ही गहत भी बो रखी है। मैंने इस बार आम, पपीता, नीबू, अनार के पौंधे भी लगाए हैं।

महिला की स्वतंत्रता

देवकी देवी, श्रमसखी, गिंगड़े

सभी लोगों का कहना है कि हम स्वतन्त्र देश में जी रहे हैं। पर कहाँ हैं वो स्वतंत्रता? महिला के लिए जो पाबन्दी पहले थीं वो आज भी हैं। हमें तो आज भी स्वतंत्रता का मतलब समझ में नहीं आया। स्वतन्त्रता और समानता तब होती है जब सभी लोग सशक्त होते, पर दुनिया के लिए औरत आज भी वही काम करने वाली मशीन है। कब और कैसे बदलेगी ये दुनिया? जब सभी आजादी से जियेंगे। बेटियों के बारे में बात करूँ तो चाहे वो सही हों तो भी गलत ही मानी जाती हैं। लड़का जितनी भी गलतियाँ करे फिर भी सही माना जाता है। महिलाओं की भावनाओं की कदर आज भी नहीं है। आज भी लडकी ही माँ बाप के बारे में कभी बेटी बनकर सोचे, कभी बहू बनकर। उसको अपना जीवन जीने का अधिकर कब मिलेगा? उसे आज भी रिश्ते नाते व समाज की उलझनो ने जकड़ कर रखा है। न चाहते हुए भी उसे सारी सामाजिक कुरीतियाँ निभानी पड़ती हैं। वो भी तो चाहती होगी जीवन में खुलापन। उसका भी तो मन आजादी से जीने को करता होगा। आजादी के इतने साल बाद भी औरत को स्वतंत्र जीने नहीं दिया जाता। एक औरत का जन्म से लेकर मरने तक का सफर दुनिया तय करती है। कभी वो बेटी है, तो कभी बहू है, तो कभी माँ। ऐसे ही रिश्ते निभाते-निभाते उसका कब अन्त आ गया पता ही नहीं चलता है।

भ्रष्टाचार एक अभिशाप

पूजा च्यौनियाल
सरस्वती स्वयं सहायता समूह, मैठानी

भ्रष्टाचार आज सबसे भयानक लेकिन चर्चित शब्द। आम आदमी का गला घोंटने और खास लोगों की सेवा का हथियार। वह हथियार जिसके द्वारा देश के पैसों का एक बड़ा भाग विदेशी बैंकों में पहुँच चुका है। एक ऐसा हथियार जिससे गरीबी नहीं गरीब मिटता है। भ्रष्टाचार एक ऐसा हथियार जिसे हर ताकतवर व्यक्ति कभी न कभी, किसी भी रूप में इस्तेमाल करता है। इसका पता तब चलता है, जब आपका पल्ला सरकारी दफ्तरों से पड़ जाए। महकमा पुलिस का हो या कस्टम का, आप स्कूल में हो या सरकारी अस्पताल में भ्रष्टाचार नामक राक्षस हर जगह मिल ही जायेगा। आम आदमी को राशन कार्ड बनाना हो या पासपोर्ट या कोई और दस्तावेज, यह एक सजा की तरह हो गया है। दफ्तरों के चक्कर काट काट कर आदमी के जूते घिस जाते हैं। किसी भी ऑफिस में अगर आपका कोई लिंक है तो काम हो जायेगा और नहीं है तो काम करवाने में छटी का दूध याद आ जायेगा। हालत यह है कि कोई जिन्दा आदमी जिसे सरकारी दस्तावेजों में मरा हुआ घोषित कर दिया गया है वह खुद को जिन्दा साबित करने के लिए चक्कर लगाता है तो कहीं किसी विधवा की विधवा पेंशन का पैसा नेताओं और कर्मचारियों (जिनकी आत्मा मर चुकी है) के रिश्तेदारों को मिल जाता है। कहीं कोई आम आदमी राशन कार्ड बनाने को तरसता है तो कही किसी के दो-दो राशन कार्ड बन जाते हैं। इसी भ्रष्टाचार नामक हथियार का इस्तेमाल कर्मचारियों का एक वर्ग जिसे हम बाबू के नाम से जानते है बखुबी करता है। इस प्राणी से हम सबका पल्ला कहीं न कहीं पड़ ही जाता है। अगर कभी आप भ्रष्टाचारी बाबुओं के चक्रव्यूह में फस जाएं तो सिर्फ एक ही चीज आपको बचा सकती है वह है.....। दूसरे सरकारी कर्मचारियों के साथ भी कामोबेश इसी तरह का मसला है। पिछले कुछ समय से भ्रष्टाचार अपने चरम पर पहुँच चुका है। शायद यह आजादी के बाद का सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार वाला समय है। यदि कोई व्यक्ति या संगठन इस दानव के खिलाफ खडा होता है तो हम सबको उसके साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर खडा होना चाहिए।

समाज परेशान, जनप्रतिनिधि शान्त और संगठन उदासीन

भगत की कलम से

कर्मठ, जुझारू, युवा, शिक्षित कहे जाने वाले जनप्रतिनिधियो की उदासीनता के कारण जिन गरीबों के बीपीएल राशन कार्ड अकारण कट गये थे वह आज तक नहीं बने हैं। हर काम में सबसे पहले लगने वाला कागज जो कभी फ्री मिलता था वह परिवार रजिस्टर आज सौ, दो सौ से तीन सौ तक का मिल रहा है। समाज कल्याण की पेंशन हो या गौरा नंदा योजना सब पर आय 4000 लिखी है लेकिन यहाँ बनता है 6000 का। सब काम रद्द हो जा रहे हैं। हजार की लंका लग जा रही है फिर बनाओ दोबारा। अगर कोई गर्भवती अपरिहार्य कारणों से स्वास्थ्य केन्द्र नही पहुँच पा रही है और घर या रास्ते मे ही बेटी को जन्म दे देती है तो उसे स्वास्थ्य विभाग संस्थागत प्रसव का प्रमाण पत्र नही देता। जिस कारण वह लाड़ली बाल विकास की सभी सुविधाओं से वंचित रहती है। पिछले साल चौमास मे सरकारी संस्थानों, विद्यालयों, आंगनबाड़ी केन्द्र, पंचायत भवन या अन्य किसी भवन परिसर मे दैवीय आपदा से हुये नुकसान दूसरे चौमास जाने पर भी जस के तस हैं। बिजली विभाग से औसतन हर गांव मे एक परिवार खराब मीटर को लेकर पीड़ित है, लेकिन समस्या का हल नही निकल रहा है। सार्वजनिक तौर पर लटके पटके जर्जर पोल बदलने का तक बजट नहीं है तो नई बिजली लाईन खिचवाने की तो सोचना ही मूर्खता है। पशुपालन, कृषि विभाग गांवो से पशुपालको एवं कृषको के के.सी.सी फार्म भर कर ले आते हैं, बैंक उनका के.सी.सी नहीं करता। समस्या बड़ी नही है लेकिन विकट बना कर रखी है। फिल्म एक था स्वजल के हिट होने बाद इस साल ऐसा लग रहा है नमस्ते मनरेगा फेमस और सफल रहेगी। एक तिहाई साल निकल गया लेकिन कार्य योजना तक नहीं आ सकी है। 25 नवम्बर को मुख्यमंत्री रुद्रपुर के गांधी पार्क में त्रिस्तरीय पंचायत प्रतिनिधियों के सम्मेलन मे प्रधानो को दस हजार की प्रोत्साहन राशि देने की बात कह गये वो आज तक नही मिली। पंचायत प्रतिनिधियों का कार्यकाल कम्पलीट की कगार पर है लेकिन जमानत राशि अब तक जब्त है। कब मिलेगी किसी को कोई पता नही है। बाकी जब्त जमानत के बाद भी जनप्रतिनिधि सोचते हैं कि उन्होंने मजबूत संगठन बनाकर सब समस्याओं का हल कर लिया है तो आपके इस संगठन को शत् शत् नमन।

ढाई आखर.....
फसल – सफल या असफल

✍बिजू नेगी

ये गर्मियों की फसल के अंतिम दौर के महीने हैं।

हालांकि पहाड़ों में खेती-किसानी के सबसे ज्यादा व्यस्त महीने तो पूरा खरीफ का मौसम ही होता है, लेकिन फिर भी, सितम्बर तक आते-आते किसान कमर कसना शुरू करने लगते हैं और कुछ अंदाजा होने लगता है कि जो फसल होगी वह किसानों की आगामी साल भर की कितनी समृद्धि तय करेगी। मैने ''कुछ अंदाजा'' शब्दावली का इस्तेमाल किया है क्योंकि दरअसल इस समय ''कुछ असमंजस'' की भी स्थिति होती है। वास्तव में खेती-किसानी पर हर समय अनिश्चितता की तलवार लटके रहना उसका स्वरूप ही बन गया है।

इसका एक कारण तो यह है कि यही महीने बंदरों और सूअरों के भी अधिक होते हैं, जो पिछले एक दशक या अधिक समय से पहाड़ की खेती-किसानी की लिए एक स्थायी त्रासदी बन गयी है। इस समस्या का समाधान सरकार या उसके वन विभाग को, जैसा कि बहुत सारी समस्याओं को लेकर है, समझ नही आ रहा है। वे अपने से वरिष्ठ अधिकारियों की ओर नजर किए बैठकें करते हैं, नियम-कानून के पन्ने टटोलते हैं, मगर जो उपाय निकलता है, वह कमोबेश व्यवहारिक साबित नही होता। इसका एक तो कारण जायज मान सकते हैं। वन विभाग के लिए यह समस्या एक दुधारी तलवार सी है क्योंकि उसे जंगल के जानवरों की भी तरफदारी करनी होती है सो वह उसका एक मूल आग्रह तो रहता ही है। ऐसे में, न तो गांव की फसल बच पाती है और न बंदरों व सूअरों का ही भला हो पाता है। प्रकृति आधारित मानवीय संवेदना के अभाव में, कोई रास्ता नही दिख पाता है।

इतने सालों से सरकार द्वारा जब इस समस्या का कोई ठोस हल नही निकला, तो हमने खुद क्या किया? लोगों का जरूर वन विभाग या स्थानीय प्रशासन से शिकायत या आग्रह रहता है कि इस बारे में वह ठोस कुछ करे। मगर क्या कभी कृषि विभाग से भी कुछ उम्मीद या सवाल किए गये हैं - बीमा या मुआवजा की मांग के अलावा? कभी-कभी लगता है कि हमने इसे खेती छोड़ने के एक और कारण से अधिक नही लिया। लोगों की यह समस्या गंभीर है, इसको लेकर वे चिंतित हैं और कई मंचों से सवाल उठाते भी हैं, मगर यह जानना अच्छा होगा कि क्या वे स्वयं अपने ही स्तर से कुछ समाधान निकालने की कोशिश कर रहे हैं? आखिर खेत व फसल तो उनके हैं न!

क्या लोग जंगली जानवरों को लेकर इस समस्या के समाधान की दिशा में कुछ प्रयोग कर रहे हैं? क्या किसी ग्रामसभा या मंगल दलों की बैठकों में इस पर चर्चा हुई है कि लोग खुद इस त्रासदी से कैसे निबटने या उसे कम से कम करने की कोशिश कर सकते हैं? दो-तीन महीने पहले के इसी कॉलम में लिखा था कि खेती-किसानी की जड़े सामाजिकता में पैठी हैं, उसका सदा ही सामूहिक, परस्पर निर्भरता का चरित्र व बल रहा है। हम कितनी बार इस समस्या को लेकर सार्वजनिक तौर पर बैठें हैं? एक बार, दो बार, तीन बार..... जरूर हो सकता है कि इस समस्या पर आप सामूहिक तौर पर बैठे होंगे, लेकिन शायद दसवीं बार की बैठक में कोई ऐसी बात निकल के आ जाए जो कुछ दूर तक जा सके। या ग्यारहवीं।

लगभग यही बात, उस दूसरे कारण पर भी लागू होती है जिससे खेती-किसानी में अनिश्तिता गहराती जा रही है। जिस तरह मानवीय या अन्य वजहों से मौसम का मिजाज अजीबो-गरीब हो गया है, फसल पकने के बाद आखिरी दिन तक किसानों के दिल में यह धुक-धुकी बनी रहती है कि बारिश या ओले न बरस जाएं और उनकी महीनों की हाड़-तोड़ की मेहनत एक ही दिन में स्वाहा न हो जाए! लोग इस पर जरूर विचार-विनिमय करते होंगे, लेकिन उसमें दीर्घकालीन निरन्तरता बन सके, यह आवश्यक है।

एक सवाल, शहर में बसे लोगों से भी, जिनके लिए किसान अदृश्य है और रिश्ता खेती-किसानी की उपज को बाजार से खरीदने तक सीमित है। क्या वे किसान के बहुआयामी चरित्र व उनके अनथके, अनसराहे कर्म के मूल महत्व व विडम्बना को महसूस कर पाते हैं?

कृतघ्नता

कितना लुटाया, और कितना लूट गए सब लोग ।
मेरी मेहरबानियों को पत्थर तले कुचल गए सब लोग।।

तिनके तिनके ला, बड़ी मेहनत से एक छत बुनी,
और सुखी शाख को आग लगाने पे तुल गए सब लोग।
क्या पाया है जीवन में, और क्या मेरा मकसद है ?
मेरे दर्द को छोड़, उस पर नमक रगड़ गए सब लोग।
मेरी मेहरबानियों को पत्थर तले कुचल गए सब लोग ।।

छोटी सी तनख्वाह लेकर, सपने काफी बड़े लिए,
मुझसे बेहतर जीवन किसका, ताना मार गए सब लोग।
टुकड़ा टुकड़ा बचाकर, छोटा सा व्यापार किया,
छोटा व्यापार कहकर, उसको ठुकरा गए सब लोग।
मेरी मेहरबानियों को पत्थर तले कुचल गए सब लोग।।

अपना मन मारा, ताकि मन किसी और का लगा रहे,
ताक पर रखके मन मेरा, मनचला कह गए सब लोग।
भूखा रहने का गम नहीं, कि पेट किसी का भरा रहे,
रोटी निगले ना निगले, ऐसे इल्जाम दे गए सब लोग।
मेरी मेहरबानियों को पत्थर तले कुचल गए सब लोग।।

चोट भर जाने की आस में, मुँह से ना एक आह उठी,
उन चोटों को हँसी बता, मुझको झुठला गए सब लोग।
अब मौत की शय्या पर, मैंने खुद को विश्राम दिया,
थोडी सी झूठी तारीफें कर, आगे बढ़ गए सब लोग।
कितना लुटाया, और कितना लूट गए सब लोग।
मेरी मेहरबानियों को पत्थर तले कुचल गए सब लोग।

✍प्रिंयक

आपसे अपील

प्रिय मित्रो नमस्कार!

श्रमयोग एक स्वैच्छिक लोक संस्थान है जो विगत 11 वर्षों से भारत वर्ष के उत्तराखण्ड राज्य में पहाड़ी जिलों अल्मोड़ा एंव पौड़ी गढ़वाल में कार्य कर रहा है। हम स्थानीय समुदाय को मजबूत सामाजिक पूंजी के निर्माण के लिये जन संगठनों में संगठित होने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। श्रमयोग के प्रयासों से पिछले 11 वर्षों में लगभग 100 गाँवों में लोगों (विशेषकर महिलाओं व बच्चों) ने अपने आप को जन संगठनों में संगठित किया है और आज ये संगठन स्थानीय मुद्दो पर अपनी आवाज मुखरता से उठा रहे हैं। आज ये संगठन `श्रम-जन स्वराज अभियान' व `प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान' के अन्तर्गत पंचायती राज सशक्तिकरण, स्थानीय संसाधन आधारित आजीविका संवर्धन एंव जल-जंगल-जमीन व जैव विविधता संरक्षण के लिए लगातार कार्य कर रहे है।

श्रमयोग इन सब गतिविधियों के संचालन हेतु किसी सरकारी एंव गैर सरकारी स्त्रोत से आर्थिक मदद नहीं लेता, सभी गतिविधियां लोगों के सहयोग से चलती हैं। संस्था जमीन से जुडकर जमीनी मुद्दों पर कार्य कर रही है। जिसका प्रभाव हमारे कार्यक्षेत्र में देखा जा सकता है किन्तु संसाधनों के अभाव में कार्यक्रम का विस्तार एक चुनौती है। क्योंकि कार्यक्रम को सुगम बनाने एंव अभियान को लगातार चलाने हेतु न्यूनतम मानव संसाधनों कि आवश्यकता होती हैं जिन्हें अपने जीवनयापन हेतु एक न्यूनतम नगद आय की आवश्यकता होती है।

लम्बे अनुभव के बाद हमने इस चुनौती से निपटने का एक वैकल्पिक रास्ता खोजा है - ''श्रम सखी''। श्रम सखी 5-6 गावों के बीच एक ऐसी स्थानीय महिला नेता है, जो अभियानों की गतिविधियों को अपना अतिरिक्त समय देती हैं। क्योंकि महिने में अपने समय का एक बडा हिस्सा ये महिलाएं अभियानों को देती हैं, अत: स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर हमने यह तय किया कि इन महिलाओं का निश्चित मासिक मानदेय होना चाहिए, जो रू0 2000 मासिक तय है। वर्तमान में 8 श्रम सखियां अभियान से जुडी हैं। जो अपने घरेलू काम के साथ अभियानों की गतिविधियों में सहयोग कर अपने परिवार के लिए नगद आय भी जुटाती हैं। आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों से आने वाली इन श्रम सखियों को मिलने वाली यह नियमित मासिक आय उनके परिवारों को मजबूती देती है। अपने इस काम से इन महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है और इन्हें समाज में पहचान मिली है।

आपसे निवेदन है कि आप एक श्रम सखी के लिये आर्थिक सहयोग कर इन्हें आगे बढ़ने में सहयोगी बनें। हम इसके लिये आपसे श्रमयोग को रू0 2,000 मासिक आर्थिक मदद करने का निवेदन करते हैं। अपनी क्षमता के अनुरुप सहयोग करें। आपका सहयोग इस अभियान के विस्तार में सहयोगी होगा।

धन्यवाद

टीम श्रमयोग।

नई किताब
'पहाड़ बेच डालो' कहानी की अन्तर्कथा

✍इस्लाम हुसैन

मेरी जिंदगी के अनुभवों पर बने पहले कथासंग्रह में 17 कहानियां हैं, पहली कहानी 'पहाड़ बेच डालो' ही है, इस कहानी की शुरुआत कहें या बैकग्राउंड, का किस्सा बड़ा दिलचस्प है।

पत्रकारिता के दौर में एक कबाड़ी की आवाज 'कबाड़ बेच डालो' मुझे परेशान करती रहती थी, यह कबाड़ी जैसा कि हर कबाड़ वाला करता है, हर तरह के और तरह से कबाड़ खरीदता था, मुझे उसका इस तरह आवाज लगाना बहुत अजीब लगता था। उसकी आवाज ऐसी लगती थी कि जैसे वो आवाज लगा रहा हो, 'पहाड़ बेच डालो' चूंकि पत्रकार के रूप में मुझको हर समय खबरों के क्लू की खोज रहती थी, इसलिए मुझे भी हर वक्त कबाड़ी वाले की आवाज में क्लू की खोज रहती थी। इधर कबाड़ी थोड़ी बहुत हेराफेरी करता था। लोगों का मानना था कि यह बड़ा माल पार कराता है जो मेरी नजर में कोई बड़ी खबर नहीं थी। कबाड़ी के कबाड़ खरीदने और बेचने को लेकर किसी खबर में मेरी रुचि नहीं थी।

इस बीच मेरा एक सरकारी विभाग के बड़े इंजीनियर साहब से मेरा परिचय हुआ, जो बोलने चालने में बहुत नम्र, मीठे, स्वभाव से शान्त दिखते थे। उनकी बातों और तौर तरीकों को देखकर मैं उन्हें ईमानदार मानने लगा था। एक बार फक्कड़ी में अपना जीवन गुजार चुके प्रतिबद्ध स्वतंत्रता सेनानी के ठेकेदार पुत्र ने उन इंजीनियर साहब के बारे में जो बताया तो मुझे बहुत बड़ा धक्का लगा। बाद में उनके बारे में और भी यह खुलासा हुआ कि वह कितने रंगे हुए सियार थे। उनकी ऊपर के अफसरों और मंत्रियों से अच्छी खासी सैटिंग रहती थी। आगे और भी उनके बहुत से किस्से सुनने को मिले जो मंत्रियों की बैठकों से लेकर ड्राइंग रूम से छन कर आए थे, कि उन्होंने कितने और कैसे कैसे प्रोजेक्ट हजम कर दिए थे। उनकी जीवन शैली भी लगातार शाहाना होती जा रही थी। कहां वह छोटा मोटा कबाड़ी जो साइकिल में फेरी लगाकर जिंदगी काट रहा था कहां यह मगरमच्छ साहब।

बस इसी प्वाइंट से कहानी 'पहाड़ बेच डालो' की शुरुआत हो गई, इसलिए यह कहानी उन बहुत सी खबरों का मुखौटा है, जिन खबरों का क्लू या प्रमाण नहीं मिल सका, जो सच्चीं थीं लेकिन उनके सुबूत नहीं थे अखबार में लिखी नहीं जा सकती थीं। जब किसी खबर का सुबूत नहीं मिलता तो वह कहानी बन जाती है। 'पहाड़ बेच डालो' की अधिकतर कहानियां ऐसी ही हैं।

उत्तराखण्ड शासन
आज़ादी का अमृत महोत्सव
75 आज़ादी का अमृत महोत्सव
समस्त देशवासियों को स्वतन्त्रता दिवस की
75वीं वर्षगांठ
की हार्दिक शुभकामनाएँ
आओ, मिलकर फहराएँ
हर घर तिरंगा
हर देश की विकास यात्रा में एक समय ऐसा आता है जब देश खुद को नए सिरे से परिभाषित करता है। आज़ादी के 75 वर्ष के इस अवसर पर हमें नये संकल्पों को आधार बनाना है, नए संकल्पों को लेकर चल पड़ना है। अगले 25 वर्षों की यात्रा भारत के इस सृजन का अमृत काल है। इस अमृत काल में हमारे संकल्पों की सिद्धि, हमें गौरवपूर्ण रूप से आज़ादी के 100 वर्ष तक ले जाएगी।
नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
मैं, भारत माता की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले सभी अमर शहीदों, महान स्वतन्त्रता सेनानियों तथा स्वतन्त्र भारत की सुरक्षा एवं अखंडता में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले सभी वीर सैनिकों को नमन् करता हूँ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज देश हर्षोल्लास के साथ 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है। नये भारत के निर्माण में नये उत्तराखण्ड का योगदान अमूल्य है। आइये, इस उत्तराखण्ड को देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाने के विकल्प रहित संकल्प को लेकर हम आज़ादी के अमृत महोत्सव की बेला पर हर घर तिरंगा लगाकर इस राष्ट्रीय पर्व को धूमधाम से मनाएँ।
जय हिन्द, जय उत्तराखण्ड
पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

आज़ादी के अमृत काल में, है यही हमारा प्रण
विकसित बने भारत अपना, सर्वश्रेष्ठ हो उत्तराखण्ड

- समान नागरिक संहिता (यूनिफार्म सिविल कोड) लागू करने हेतु 5 सदस्यीय कमेटी द्वारा कार्य प्रारम्भ।
- गरीबों के लिए तीन गैस सिलेण्डर मुफ्त।
- 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में उत्तराखण्ड 'एचीवर्स' की श्रेणी में चयनित।
- उत्तराखण्ड राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू करने वाला देश का पहला राज्य, 4457 आंगनबाड़ी केन्द्रों में बाल वाटिका की स्थापना हुई।
- पर्वतमाला रोप-वे, टनल पार्किंग और होम-स्टे विकास के माध्यम से पर्यटन इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूती।
- कुमाऊं मण्डल में मानस खण्ड मन्दिर माला योजना प्रारम्भ।
- राज्य में मोबाइल कनेक्टिविटी मजबूत करने के लिए केन्द्र सरकार से 1206 मोबाइल टावरों की स्वीकृति।
- मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, मुख्यमंत्री नैनो योजना के माध्यम से रोजगार के एक लाख से अधिक नवीन अवसर सृजित।
- 9.30 लाख किसानों को 1581 करोड़ रुपये पी०एम० किसान सम्मान निधि प्रदान की गई।
- दीन दयाल उपाध्याय सहकारिता किसान योजना के अन्तर्गत 1.21 लाख से अधिक किसानों को रुपये 800 करोड़ का ब्याज मुक्त ऋण।
- महिला स्वयं सहायता समूहों को 5 लाख रुपये तक ब्याज मुक्त ऋण।
- ग्रोथ सेन्टरों/बिजनेस इन्क्यूबेटर और ग्रोथ सेन्टरों के माध्यम से 30 हजार से अधिक किसानों एवं शिल्पकारों को प्रोत्साहन।
- ऋषिकेश-कर्णप्रयाग व टनकपुर-बागेश्वर रेल परियोजनाओं पर तीव्र गति से कार्य।
- वात्सल्य योजना के माध्यम से कोरोना महामारी से प्रभावित बच्चों को 3000 रुपये प्रतिमाह की आर्थिक सहायता।
- आयुष्मान योजना में 47 लाख कार्ड बनाये जा चुके हैं, जो राष्ट्रीय औसत का 2.5 गुना है।
- देहरादून में सैन्य धाम की स्थापना की जा रही है।
- उत्तराखण्ड राज्य के वीरता पदक से सम्मानित सैनिकों हेतु देय एकमुश्त अनुदान में भारी वृद्धि।
- एक जिला-दो उत्पाद योजना के अन्तर्गत जिला स्तरीय निर्यात योजना विकसित।
- अमृत सरोवर योजना के अन्तर्गत 13 जनपदों में 1240 अमृत सरोवर विकसित करने हेतु कार्य प्रारम्भ।
- एक राष्ट्र-एक राशन कार्ड योजना पर तेजी से कार्य जारी। अब तक 58000 परिवार आच्छादित।
- सुशासन को बढ़ावा देने के लिए 215 लाभार्थी परक योजनाओं में डी.बी.टी. का उपयोग।
- भ्रष्टाचार पर रोक लगाने हेतु भ्रष्टाचार मुक्त एप-1064 प्रारम्भ।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है।

- सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

नैनीडांडा क्लस्टर
आसना

अगस्त माह में प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान के अर्न्तगत कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की गई। सदस्याओं ने अपने घरों का कूडा फेंकने के लिये एक निष्चित स्थान को चुनने का निर्णय लिया। सितम्बर माह की बैठकों में एक बार फिर चर्चा करके कूड़े के गड्ढे बनायें जायेंगे। गाँवों में अक्सर देख जाता है कि गधेरों में कूडा फेक दिया जाता हैं।

इस माह सतखोलू ग्राम सभा में ग्राम प्रधान द्वारा सदस्याओं को पौंधे उपलब्ध करवाये गये जो सदस्याओं द्वारा लगाये गये और उनका पूरा ध्यान देने का वादा किया गया। सितम्बर माह के लिए महिलाओं ने मूली, पालक, मैथी, राई, धनिया के बीजों की मांग की है।

रचनात्मक महिला मंच अपना महोत्सव हर साल नवम्बर के अंतिम रविवार को मनाता है। कोविड 19 के दौरान महोत्सव महिलाओं ने अपने-अपने गाँव में मनाया था। 2021 का महोत्सव जमरिया गाँव में मनाया गया था। इस बार का महोत्सव कहां होना है अभी तो यह निष्चित नहीं हुआ हैं। इसकी बैठक होना अभी बाकी है, परन्तु मंच की अध्यक्षा धनेष्वरी देवी अपने वहां कार्यक्रम तैयार करने के लिए लगातार महिलाओं से बात कर रहीं हैं।

चाँच-झीमार एंव रथखाल क्लस्टर
राकेश, दाड़िमी

इस बार चांच में दो समूहों को छोड़कर सारे समूहों की बैठकें आयोजित की गयी, जिसमें सबसे पहली बैठक झिमार में की गयी। सदस्याओं का कहना था की हमें अपने गांव में बाल मंच बनाना है, और साथ-साथ हमें स्वास्थ उपकरणों की जानकारी चाहिए, इसके लिए आशा कार्यकर्ता की भी मदद ली गयी। 2 तारीख को पल्लीगांव में बैठक की गयी, जिसमें सदस्याओं का कहना था की इस बार अदरक की खेती में बहुत नुक्सान हो रहा है शायद इसका करण समय पर बारिश न होना रहा। 5 को झीपा में बैठक की गयी, जिसमें पंचायती राज पर चर्चा करते हुए महिलाओं को वर्तमान स्थिति से अवगत करते हुए आगे की रणनीति पर बात की गयी। नैकणा में भी बैठक की गयी जो नया समूह है, इसमें अभी प्रारंभिका का अध्ययन किया जा रहा है। इजराल चांच में इस बार धारा विकास प्रोग्राम पर चर्चा की गयी जिसमें धार विकास कार्यक्रम में लगे पेड़ों के देखरेख की बात कही गयी। 11 को कुक्लयाल बाखली में बैठक की गयी, जिसमें महिलाओं ने अपनी बचत राशि को बांटने का फैसला लिया। सद्भावना यात्रा पर फिर से चर्चा की गयी। 12 को मल्ला बिरलगांव में बैठक की गयी जिसमें इस बार बच्चों की शिक्षा एंव महिला पुरूष समानता क्या है पर चर्चा की गयी। 13 को पीपना में बैठक की गयी जिसमें श्रमयोग के अभियानों पर बात की गयी, साथ-साथ समूहों की बैठकों की गुणवत्ता पर चर्चा की गयी। 15 को बिचला चांच में बैठक आयोजित की गयी जिसमें इस बार महोत्सव को लेकर विस्तार से चर्चा की गयी तथा श्रम उत्पाद की गुणवत्ता पर भी बात की गयी। 18 को बिरलगांव तल्ला में बैठक की गयी जिसमें तीनों अभियानों पर चर्चा कर महिलाओं ने कहा कि खेती का दायरा धीरे-धीरे सिमट रहा है यह हमारे लिए चिंता की बिषय है, जिसका कारण जंगली जानवर तो हैं ही किंतु इससे बड़ा कारण जलवायु परिवर्तन है, जिसे हमें समझना पड़ेगा, क्योंकि अभी भी हम पुराने मौसम पर खेती चलाते हैं। बैठकों में श्रम-उत्पाद का भुगतान किया गया तथा श्रम-उत्पाद में 300 किलों हल्दी फिर से एकत्र की गयी। श्रमयोग पत्र के नये सदस्य बने, विधायक को दिये जाने वाले ज्ञापन को पढ़ा गया तथा हस्ताक्षर अभियान के तहत हस्ताक्षर कराये गये, साथ-साथ हेलंग प्रकरण पर भी चर्चा की गयी।

गिगंडे क्लस्टर
देवकी देवी, श्रमसखी

अगस्त माह में गिगडे क्लस्टर की मासिक बैठको का आयोजन किया गया। बैठकों में सदस्याओं के साथ रबी के सीजन में निकलने वाले उत्पादों के एकत्रीकरण को लेकर चर्चा की गई व जिन सदस्याओं ने श्रम उत्पाद हल्दी में प्रतिभाग किया था उन सभी सदस्याओं का भुगतान भी किया गया। सदस्याओं द्वारा सर्दी के सीजन में बोये जाने वाली हरी पत्तेदार सब्जियों के बीज की की मांग की गई जिसमें सदस्याओं से सितम्बर माह में बीज वितरित करने को कहा गया।

सदस्याओं द्वारा जंगली जानवरों के आतंक व रचनात्मक महिला मंच द्वारा विधायक को दिये जाने वाले मांग पत्र पर भी चर्चा की गई।

जमरिया व थला क्लस्टर
सुरेन्द्र, श्रमयोग

अगस्त माह में दोनों ही क्लस्टरों की मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। बैठकों में समूह की सदस्याऐं व बाल मंच के सदस्यों ने भाग लिया। अगस्त माह की बैठकों में रचनात्मक महिला मंच ने अपनी सदस्याओं को श्रम उत्पाद का भुगतान किया और रबी के सीजन में निकलने वाले उत्पादों जैसे जखिया, भंजीर, मिर्च, तिल आदि की सूची बनाई गई। सर्दी सीजन में बोये जाने वाली पत्तेदार सब्जियों के बीज की मांग को रचनात्मक महिला मंच व श्रमयोग संस्थान के सम्मुख रखा गया व बीज सितम्बर माह में वितरित करने को कहा गया।

समूह की सदस्याऐं पूरे क्षेत्र में हिंसक बाघों के आतंक को लेकर प्रषासन व विधायक महोदय को पत्र व ज्ञापन मे माध्यम से अवगत करा रही हैं। उज्जवल भविष्य समूह के लोगों का कहना है कि हमारे यहाँ चारे की दिक्कत बहुत है जिसका कारण जंगली हिरन, काकड, घुरड द्वारा सारी घास का चर जाना है। बन्द्राण क्षेत्र में आवारा गायों की समस्या निरन्तर बनी है।

सामुदायिक मुद्दों को उठाने व अपनी आवाज को मजबूत करने के लिए लोग श्रमयोग पत्र को लिख-पढ़ रहे हैं। बाल मंच लगातार ग्राम स्तर पर पर्यावरण चेतना केन्द्र के माध्यम से अपनी जैव-विविधता, पर्यावरण, अपने आस-पास को जान रहे हैं और वैज्ञानिक चेतना को बढ़ा रहे हैं। बच्चे अपने बाल मंच के माध्यम से थला व नदोली गाँव में पर्यावरण के प्रति जागरूकता ला रहे हैं। बाल मंच अपने क्षेत्र के तापमान व वर्षा के डेटा को निरन्तर समझ रहे हैं।

जसपुर क्लसटर
आसना, श्रमयोग

सामाजिक पूँजी बढाओं अभियान के अर्न्तगत गाँव स्तर पर महिलाओं व बच्चों को समुदाय आधारित संगठनों में संगठित होने के लिये प्रेरित किया जाता है। इसके अन्तर्गत इस बार सल्ट ब्लॉक के कालीगाँव से करीब डेढ किलोमीटर की दूरी पर एक गाँव है आमधार, इस माह वहां दूसरी बैठक की गई। जिसमें कुछ महिलाओं ने संगठन में जुडने का निर्णय लिया । 26 अगस्त के दिन समूह का गठन किया गया।

श्रम जन स्वराज अभियान के अर्न्तगत तय दिनांक में मसिक बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमें जनपक्षीय मुददों को रखा गया। महिलाओं को हेंलग घाटी में हुई घटना के बारे में बताया गया। इस बार रचनात्मक महिला मंच अपनी समुदायिक रोजमर्रा के कार्यों में काम आने वाली समस्या को लेकर विधायक को ज्ञापन देने वाले हैं, जिसके लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। महिलाओं की प्रतिक्रिया थी कि राजनेता कुछ नहीं करते हैं, बस साल में एक बार आते हैं। अपनी सकल दिखाते हैं कोई दोबारा आकर नहीं पूछता कि आप के क्षेत्र में क्या परेशानी है। क्यों न हमें अपने समूह की महिला को ही उठाना चाहिए जो साथ रहें, हमारी बात सुनें।

प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान के अन्तर्गत महिलाओं ने बताया कि इस बार ग्राम प्रधान द्वारा वृक्षारोपण के लिए आम, नीबू, लीची के पौधे दिये गये थे, जिन्हें हमने अपने घरों के आस-पास लगाया ताकि उसकी देख रेख हो सके। सितम्बर माह के लिए महिलाओं ने मूली, पालक, मैथी, राई, धनिया के बीजों की मांग की है।

घचकोट क्लस्टर
विजय, श्रमयोग

इस माह घचकोट कलस्टर में श्रम जन स्वराज अभियान के तहत सामुदाय आधारित संगठनों की क्षमता विकास हेतु स्वयं सहायता समूहों में पंचायतीय राज के बारे में बताया गया। जिसमें सदस्याओं को ग्राम सभा की खुली बैठकों के आयोजन व ग्राम पंचायतों में होने वाले प्रस्तावों के चयन की प्रक्रिया को बताया गया। साथ ही मनरेगा में मांग आधारित कार्य हेतु किस तरह से स्वयं सहायता समूह आवेदन कर सकते हैं, के विषय पर विस्तार से चर्चा की गई।

आजीविका सम्पूरण में समूहों को खेती करने के लिए प्रेरित किया गया। जिसमें सदस्याओं को खेती में होने वाले उत्पाद को एक बेहतर दाम देने के लिए बाजार उपलब्ध कराने की बात कही गई। बैठकों में कहा गया कि रचनात्मक महिला मंच के उपक्रम श्रम उत्पाद द्वारा हल्दी, गहत, भट्ट, मडुवा, जखिया उडद, भंगजीरा इत्यादि को जिस तरह से एक अच्छा बाजार मिला है इससे रचनात्मक महिला मंच की सदस्याओं के आजीविका पर अच्छा असर पडा है। आगामी माहों में सदस्याओं ने सब्जियों के बीजों जैसे राई, मैंथी, पालक, धनिया, भिण्डी, करेला की मांग की है। सदस्याओं को बीज समय पर देने की बात कही गई।

बैठकों में क्षेत्रीय समस्याओं जैसे पक्की सड़क होने के बावजूद सिलेण्डर गाड़ी का न आना, विकास से सम्बन्धित योजनाओं का ग्राम सभा तक सुचारू रूप से न पहुंचना, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं मनरेगा में रोजगार की समस्याओं को देखते हुए क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर इन समस्याओं के निराकरण के लिए कार्य करने पर भी चर्चा हुई।

भ्याड़ी क्लस्टर
पंकज, श्रमयोग

अगस्त माह में भ्याड़ी क्लस्टर की सभी बैठकें पूर्ण हुई तथा कलस्टर में रु0 1 लाख 30 हजार का श्रम उत्पाद (हल्दी) का भुगतान किया गया। इस बार क्लस्टर में दीपा देवी, ग्राम डहला, द्वारा सबसे ज्यादा हल्दी (लगभग 160 किलो) का उत्पादन किया गया। समूह ने इस पर खुशी जाहिर की। अगस्त माह में डहला से 12 सदस्याओं द्वारा श्रमयोग पत्र की भी सदस्यता ली गई। बीजों को लेकर महिलाओं द्वारा अपनी बातें रखी गई व पालक, राई, मूली, मैथी, धनिया के बीजों की मांग रखी गई। जल-जंगल-जमीन को लेकर विस्तृत चर्चाए की गई। इस प्रकार अगस्त माह की बैठके समाप्त हुई।

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 अगस्त	25	25	19	28	27	26	21	29
2 अगस्त	26	24.5	18	28	27	25	19	30.5
3 अगस्त	26	25	17	29	27	26	20	30
4 अगस्त	26	24.5	15	29	27	25	19	29.5
5 अगस्त	26	26	20	29	27	26.5	18	29
6 अगस्त	26	26.5	19	28	27	26	18	29.9
7 अगस्त	26	26	19	28.4	28	27	20	30
8 अगस्त	27	25	19	29	29	26.5	21	31.2
9 अगस्त	28	26	19	30	30	27	22	31.8
10 अगस्त	27	26.5	19	30	30	26	21	32
11 अगस्त	27	26	18	30.2	29	27.5	19	30.7
12 अगस्त	27	25	19	30	29	27	22	30.7
13 अगस्त	27	27	18	30	29	27.5	20	32
14 अगस्त	27	26.5	18	30	29	27	19	30
15 अगस्त	27	26	15	29	29	27.5	20	29.9
16 अगस्त	27	26.5	16	28	29	27	20	30.5
17 अगस्त	27	26	18	28	28	26.5	20	30
18 अगस्त	26	27.5	19	28	28	28	20	30
19 अगस्त	27	27	18	28	27	28	21	30
20 अगस्त	26	28	19	28.5	27	29	20	30
21 अगस्त	26	27	17	28.5	27	28	20	30
22 अगस्त	26	27.5	18	29	27	26	19	30
23 अगस्त	26	27	15	29	28	26.5	20	30
24 अगस्त	26	26	16	29.5	28	25.5	19	30
25 अगस्त	26	25.5	19	29	28	25	20	30
26 अगस्त	26	25	19	29	28	24.5	21	30
27 अगस्त	26	24	15	30	29	25	19	31
28 अगस्त	26	26.5	18	30	29	25.5	21	30
29 अगस्त	26	26	19	29.5	30	27	20	29.9
30 अगस्त	26	27	18	29.5	30	26.5	20	30

वर्षा (मीमी)

दिनाँक	बल्यूली (सल्ट)
1 अगस्त	4
3 अगस्त	5
4 अगस्त	6.3
5 अगस्त	1
11 अगस्त	2
14 अगस्त	35
15 अगस्त	5
16 अगस्त	1
20 अगस्त	42
24 अगस्त	15
25 अगस्त	10
28 अगस्त	18
29 अगस्त	13
30 अगस्त	9

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

28 अगस्त, 2022

स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौठा पानी नौला	6.8	6.8	6.8	27	27	27
धारा पानी	7.2	7.2	7.2	40	40	40
शिव मन्दिर नौला	7.1	7.1	7.1	39	39	39
हैंड पंप नौला	7.8	7.8	7.8	39	39	39

सद्भावना यात्रा 2022: यात्रा वृतांत–3

हम सबकी है कामना, सद्भावना, सद्भावना

भुवन पाठक, यात्रा संयोजक

12 मई को सुबह का नाश्ता छतोला में ही बना। निशांत नरेन्द्र और सुंदर भाई सुबह से ही नाश्ते की तैयारी में लग गये। साहब सिंह जी ने रात के बर्तन साफकिये। सुबह से ही रंग बिरंगी चिड़ियों का डेरा घर के आसपास लगा रहा। जेठ के महिने की शुरुआत थी तो खुमानी व प्लम पकने कि शुरुआत हो रही थी। इसलिए अनेक प्रकार की चिड़ियों का जमावड़ा लग गया। सुबह-सुबह कर्नल साहब (निर्मला के पति) मिलने आ गये। गर्म जोशी से स्वागत किया। निर्मला और खष्टी दोनो बहिनें लक्ष्मी आश्रम की छात्रायें रहीं है। गांधी विचार प्रशिक्षण लिया है। निर्मला के पति सेना से रिटायर्ड कर्नल हैं। मूलत: दिल्ली के रहने वाले हैं पर अब पहाड़ी हो गये हैं। छोटा सा घर बनाकर यही रहते हैं। नाश्ते से पहले गाँव के दो एक परिवारों में मिलने गये। बातचीत में बस जमीनों की चिंता, नये निर्माण के प्रति आक्रोश, जमीन बेच कर भी अधिकांश परिवारों की माली हालत पहले जैसी ही है। कुछ परिवारों ने यहाँ जमीन बेच कर मिले पैसों से हल्द्वानी में मकान बना लिया, किसी ने गाड़ी ली, पर सबकी माली हालत में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आया। जमीनें बिकवाने वाले एजेंटों ने खासा पैसा बनाया है। वो ही लोग ग्राहक लाते हैं कीमतें तय करते हैं। वही लोग निर्माण के धन्धे में हैं, ठेकेदार हो गये हैं। लोगों ने कहा कि अधिकांश जन प्रतिनिधि और पंचायत प्रतिनिधि जमीनों के सौदे करवाते हैं। पहले ऐसा नहीं था, अब है, पर इससे जमीन बेचने वालों का शोषण नहीं होता है। पहले औने-पौने दाम में बेच दी जमीनें। अब कम से कम पैसे तो ठीक ठाक मिल जाते है। युवाओं की राय जमीन बेचने के पक्ष में बिल्कुल नहीं है।

नाश्ते के बाद छतौला से सतखोल आ गये। सतखोल के सामुदायिक भवन जहाँ जीवन मांगल्य ट्रस्ट का कार्यालय व गांधी वादी कार्यकर्ता अनिरुद्ध जाडेजा का निवास है। अनिरुद्ध जाडेजा मूलत: गुजरात के जामनगर के रहने वाले है। स्कूल के दिनों से ही रामकृष्ण मिशन, विमला ठकार ताई, गांधीवादी चुन्नीलाल वैद्य के संपर्क में प्रशिक्षित हुये हैं। 1998 से उत्तराखण्ड में हैं। सुन्दर लाल बहुगुणा जी के साथ उनके शिल्यारा आश्रम में, उसके बाद लक्ष्मी आश्रम कौसानी में रहे। कंधार शराब बंदी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के मंत्री भी रहे। दो से ज्यादा दशकों से पहाड़ के आन्दोलन व रचनात्मक कार्यों में भागीदार हैं। आजकल रामगढ़, प्यूडा, मुक्तेश्वर के आसपास जल संचय व जल स्रोत संरक्षण, पीरूल से बिजली बनाने की योजना, आर्थिक स्वालंबन तथा संस्कार शिविरों में सक्रिय हैं। आजकल गुजरात प्रवास पर हैं। खष्टी बहिन ने आज की बैठक की तैयारी की है। खष्टी बहिन इस क्षेत्र में अनिरुद्ध भाई के साथ सक्रीय हैं। उन्होंने खुद का पीरूल से बिजली बनाने का प्लांट लगाया है। सतखोल में यात्रा दल का पड़ाव है। स्थानीय युवा व बहिनें तैयारी में हाथ बंटाने आ गयी। पानी का भीषण संकट है। लोगों की शिकायत है कि नये निर्माण और होटल बन जाने के बाद पानी का संकट बड़ गया है। पानी बंट गया है। जल विभाग भी पानी की कालाबाजारी करता है। बड़े होटलों को पानी बेच देते हैं। बैठक की तैयारी जारी है.....।

आज 13 मई है। कल की रात सतखोल के सामुदायिक भवन में गुजरी। रात को तेज हवाओं के साथ वर्षा की बौछारें जारी रहीं। टिन की छत में बारिश की आवाज कभी मधुर संगीत तो कभी डरावनी लगती हैं। बिजली तो खाते समय ही जा चुकी थी। ठंड भी अच्छी खासी थी, वो तो भला हो खष्टी, निर्मला, भुवन व रमदा का पर्याप्त बिस्तर आ गया। वरना सारी रात मौसम को कोसने में जाने वाली थी।

सुबह-सुबह साहेब सिंह भाई और अन्य साथी काफ्ल तोड़ने चले गये। बाकी लोग नाश्ता बनाने में व कुछ साथी आज की योजना बनाने में व्यस्त हो गये। कल शाम विजय महाजन व शोमनाथ घोष भी यात्रा दल में शामिल हो गये। नाश्ता करने के बाद यात्रा जैंती को रवाना हुयी। रास्ते में दो प्रमुख कस्बों में नुक्कड़ सभायें व सांस्कृतिक जलूस का कार्यक्रम तय था। पहले हम मुक्तेश्वर पहुंचे। यह बहुत पुराना बजार है। छोटा सा बाजार अंग्रेजों का बसाया हुआ। ज्यादा तर मकान ब्रिटिश दौर के बने हैं। बैंक व पोस्ट आफिस सहित जरूरत की सामान की दुकानें तथा चाय नाश्ते के खोम्चे तथा कुछ होटल। बाजार के ऊपर चोटी पर मंदिर है। चौक के बिल्कुल सामने आई0वी0आर0आई0 संस्थान जो पशु रोगों की दवाओं का अनुसंधान संस्थान है। ज्यादा भीड़-भाड़ वाला इलाका नहीं है। इक्का-दुक्का लोग तथा कुछ सरकारी कर्मचारी के अलावा कुछ पर्यटक। ज्यादातर समय सुनसान रहने वाले इलाके में हमने अपना लाउडस्पीकर शुरू कर जनगीत गाना शुरू किया तो लोगों के लिए बहुत अलग सी गतिविधि थी।

कुछ लोग बैंक के बाहर, दो-तीन लोग सामने बारबर की दुकान में, कुछ लोग आई0वी0आर0आई0 के गेट पर धूप में सिमटे खड़े हो गये। मैंने सद्भावना यात्रा के बारे में तथा देश व उत्तराखण्ड के सामने खड़ी चुनौतियों पर बात करनी शुरू की। जब लोग आपके सामने न हों, दूर-दूर अलग-अलग दिशाओं में खडे हों, जब आप यह अनुमान भी न लगा पा रहे हों कि लोग सुन भी रहे हैं या नहीं तब अपनी बात को पूरी कुशलता और आत्मविश्वास से बोलना सबसे कठिन चुनौती होती है। लगभग 10-12 मिनट बोलने के बाद मैनें भाषण रोकने का फैसला किया और सभा को समाप्त कर दिया। मैं अंदर से बहुत विचलित था क्योंकि सभा अच्छी नहीं हुई थी। फिर दिन का पहला कार्यक्रम ही कमजोर जाये तो निराशा स्वभाविक थी। फिर नये साथी शोमनाथ घोष व विजय महाजन का भी पहला दिन था यात्रा में। इसने भी मुझे ज्यादा संवेदनशील बना दिया था।

खैर सभा समाप्त होते ही दूर-दूर खड़े लोग पास आने लगे व यात्रा के मकसद से सहमति जताते, उस पर बात करने लगे। जल्द ही हम सब लोग स्थानीय नागरिकों से घिर गये और सद्भावना समेत अन्य मुद्दों पर बात होने लगी। पहाड़ पर पॉलीथीन का कचरा, पानी का संकट, गधेरों का सूखना, भू-कानून जैसे सवालों पर खूब बात हुई। जिस निराशा का मैंने जिक्र किया वो थोड़ी सी देर में हवा हो गयी। हमको लगा कि यह भी सफल मॉडल है संवाद करने का।

अगले पड़ाव भटेलिया में भी कोई बैठक का आयोजक नहीं था। यह बाजार इस क्षेत्र का सबसे बड़ा बाजार तथा सबसे ब्यस्त व भीड़-भाड़ वाला बाजार है। यहाँ एक लंबे सांस्कृतिक जलूस ने बाजार में माहौल बना दिया। लोगों ने सांस्कृतिक जलूस का साथ दिया तथा मुख्य चौक पर लोग सभा की बात सुनने के लिए जम गये। संख्या और भागीदारी के लिहाज से यह निश्चित ही बेहतर नुक्कड सभा हो गयी। इस्लाम भाई व साहेब सिंह ने अपनी बात रखी। मेरा भाषण भी जोशीला ही था। सभा के बाद लोग आ गये फिर पुन: सार्थक चर्चा होने लगी। एक स्थानीय होटल व्यवसायी जो रहने वाले तो टिहरी के हैं लेकिन होटल भटेलिया के पास चलाते हैं ने चाय-पकोड़े का शानदार नाश्ता कराया। उसके बाद हम जैतीं को चले। धानाचूली के बाद मोतिया पाथर तथा मोर नौला के शानदार जंगलों से गुजरे। यहाँ भी भू-भक्षी दिखने लगे हैं। विजय महाजन ने 5 किलो काफल का सौदा किया था भटेलिया में। अब हमारे पास मोरनौला के जंगल में खाने के लिए पर्याप्त से अधिक काफल थे। अब जैंती पहुँच रहे हैं।

जैंती, अब हम अल्मोड़ा जनपद में हैं। जैंती को यात्रा पड़ाव बनाने के दो बड़े कारण थे, एक तो यह सालम की क्रांति की भूमि है दूसरा खादी की प्रयोगशाला। यह स्व0 केदार सिंह कुंजवाल तथा देवकी दीदी का कार्यक्षेत्र रहा है। हम लोग सायं 4 बजे से थोड़ा पहले सर्वोदय आश्रम कुंज-जैंती पहुँचे। दिनेश कुंजवाल और उनके साथी हमारा इंतजार कर रहे थे। अपने पुराने दिनों के विपरीत अब यह स्थान ज्यादा सुनसान व गतिहीन सा लगा। लेकिन पुराने दिनों का वैभव व सक्रीयता के अवशेष अभी भी मौजूद हैं। खादी के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की मौजूदगी देखने को मिली। मेरा इस स्थान से ज्यादा रिश्ता रहा, खासकर जिन दिनों स्व0 केदार कुंजवाल जी उत्तराखण्ड सर्वोदय मडंल के अध्यक्ष थे। तब में सर्वोदय का पूर्णकालीक कार्यकर्ता था। तब यह आश्रम खादी के काम तथा युवा शिविरों तथा सर्वोदय के काम का सक्रिय केन्द्र था। यहाँ कुमाऊंनी कविता पर सालाना सम्मेलन होता था।

चाय के बाद हम सब लोग साथ में दिनेश कुंजवाल जी, नेगी जी के साथ स्थानीय कस्तूरबा बालिका आवासीय बालिका विद्यालय में बैठक के लिए गये। वहाँ की शिक्षिकाओं ने सुन्दर तैयारी की थी। प्रदेश के अलग-अलग इलाकों से बच्चे यहाँ पढ़ने आते हैं। इन विद्यालयों में समाज के सबसे कमजोर आर्थिक स्थिति वाले परिवारों की बच्चियाँ पढ़ने आती हैं। ये वो बच्चियाँ हैं जो अगर यहाँ नहीं आये तो कहीं और पढ़ने की संभावना भी न रहे। यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ भोजन, किताबें, वरदी आदि भी सरकार मुहैया कराती है। बच्चों तथा हमने मिलकर गीत गाये, उसके बाद पद्म श्री बसंती बहिन ने अपने संघर्ष की कहानी बतायी। इससे बच्चे खूब उत्साहित दिखे। फिर बच्चों ने भी अपनी बात रखी। हमने उत्तराखण्ड के स्थानीय व राष्ट्रीय जन-नायको की चित्र प्रदर्शनी भी लगाई। बच्चों को इन सबके जीवन व योगदान के बारे में बताया। शाम को आत्मियता से शानदार भोजन परोसा गया। निजी बातों के साथ भोजन और भी शानदार बन गया। अब कल के व्यस्तताओं वाले दिन का इतजार है।

आज 14 मई है। आज सभी साथी कल रात की अच्छी नींद और आराम के बाद काफी तरोताजा थे। बसंती बहिन ने सुबह 6 बजे से ही हमारे कमरों में प्रभात फेरी शुरू कर दी। तब तक चाय और काढ़ा लेकर नेगी जी भी आ गये। चमकदार धूप के साथ चाय और काढ़ा पीने के बाद सबने कपडे धोये। यात्रा के दौरान जहाँ भी अच्छा पानी मिले वहाँ नहाना तथा कपड़े धोना जरूरी होता है। नाश्ते की आवाज के साथ सब लोग रसोई के पास पहुँचे। रात की ही भाँति दिनेश कुंजवाल और उनकी पत्नी खुद की देख-रेख में नाश्ते का इंतजाम सँभाले थे। अच्छे से नाश्ता करने के बाद सब लोग प्रार्थना कक्ष में पहुँचे। वहाँ देवकी बहिन तल्लीनता से बागेश्वरी चरखे पर ऊन कात रही थी। बागेश्वरी चरखा आजादी के आन्दोलन तथा आजादी के बाद पहाड़ के लोगों के लिये राष्ट्रीय संघर्ष और रचना का प्रतीक बना रहा है।

खादी के काम ने एक समय में पहाड़ के हजारों गरीब परिवारों को कताई के रोजगार प्रदान किये। बागेश्वरी चर्खा जिसे बागेश्वर के जीत सिंह टंगडिया ने बनाया था। यह चर्खा 1929 में स्व0 टंगडियाजी द्वारा गाँधीजी को भेंट किया गया। गाँधीजी ने इस चरखे को बागेश्वरी चर्खा कहा। 1934 के बाद इस चरखे का व्यवसायिक उत्पादन हुआ। 1980 और 90 के दशक तक कुमाँऊ के गाँवों में जाड़ों के दिनों में कताई और बुनाई साधन रोजगार का माध्यम था। स्व0 केदार सिंह कुंजवाल ने इस चरखे में सुधार कर इसे ऊन कताई चर्खा बनाने का प्रयास किया।

सभागार में सर्व धर्म प्रार्थना के बाद यात्रा के उद्देश्य तथा पर्वतीय ग्राम स्वराज मंडल कुंज के कामों पर चर्चा हुई। अंत में देवकी बहिन के आर्शीवाद के साथ प्रार्थना सभा का कार्यक्रम समाप्त किया। उसके बाद यात्रा दल स्थानीय सर्वोदय इंटर कॉलेज को रवाना हुआ जहाँ आज की पहली गोष्ठी थी। स्कूलों में ग्रीष्मकालीन अवकाश होने है अत: यात्रा के दौरान आगे स्कूलों में विद्यार्थियों से संवाद करने का अवसर कम ही मिल पायेगा।

सर्वोदय इंटर कॉलेज यहां के प्रमुख शिक्षण संस्थानों में है तथा इस स्कूल में आस-पास के गाँवों के 450 से अधिक बालक-बालिकाएं पढ़ाई करते हैं। पहाड़ के सरकारी स्कूलों में ज्यादातर वो बच्चे पढ़ते है जिनके माता-पिता या परिवार आज भी पहाड़ों में अपने गाँवों में रह रहे हैं। स्कूल में यात्रा के स्वागत की तैयारिया की गई थी। साथियों ने पहुँचते ही स्थानीय नायकों की चित्र प्रदर्शनी तथा पुस्तक प्रदर्शनी लगा दी। साथ ही स्वागत की औपचारिकता माल्यार्पण, बैज लगाना जैसे तामझाम में इतना समय निकल गया कि कुछ बच्चे बोर होने लगे। गोपाल भाई ने जनगीत से थोडा जोश व उमंग का संचार किया तत्पश्चात बच्चों को यात्रा का उद्देश्य तथा विवरण रखा गया। कुल मिलाकर सभा बहुत उत्साह जनक संवाद करने में विफल रही क्योंकि आज के बच्चों के संदर्भ में उनकी बातचीत तथा रूचि भाषा सब बदल गयी है, लेकिन बाहर चित्र प्रदर्शनी ज्यादा रोचक तथा संवाद स्थापित करती दिखी। बाहर बच्चों के अलग-अलग समूहों से बातचीत तथा संवाद स्थापित किया। ज्यादातर बच्चे सुनी-सुनाई या पढी-पढ़ाई बातें ही बोल पा रहे थे। असल में वो हमारे साथ रिश्ता महसूस नहीं कर पा रहे थे और न ही हम इतने कम समय में अपने रिश्ते को बना पाये। बच्चों के लिये यात्रा का आना एक घटना की तरह घटा और समाप्त हो गया। आज की पीढ़ी के बच्चों के साथ संवाद की कला को बेहतर ढंग से समझना होगा।

सभा के बाद वापस हम संस्था के परिसर में पहुचे। भोजन और अल्प विराम के बाद शाम के कार्यक्रम के लिये शहीद स्मारक धामदेव रवाना हो जाते हैं। धामदेव वह स्थान है जहाँ 1942 के भारत छोडो आन्दोलन के समय क्रान्ति बिगुल बजा था। 25 अगस्त 1942 को सालम के कई गाँवों के लोग तिरंगा हाथ मैं लेकर ढोल नगाड़ों के साथ धाम के प्रागंण मे एकत्र हो गये। थोड़ी देर में समाचार मिला कि सालम की क्रान्ति का दमन सख्ती से करने के लिये ब्रिटिश पुलिस आ रही है। पुलिस ने पहुँचने पर हवाई फायरिंग की तो जनता ने पत्थरों की बौछार से जवाब दिया। इस गोलीबारी में नर सिंह धानक व टीका सिंह कन्याल शहीद हो गये। आज वहाँ प्रतिवर्ष शहीदों की याद में एक बड़ा मेला 25 अगस्त को लगता हैं। शहीद स्मारक पर फूलमाला चढ़ाने के बाद हम शहीद टीका सिंह कन्याल के गाँव काण्डे को रवाना हुये। वहाँ शानदार सभा हुई जिसमें गाँव की महिलाओं, युवाओं तथा नागरिको ने अच्छी संख्या में भागीदारी की। काण्डे गाँव भी पलायन का शिकार हुआ है। यहाँ की युवा पीढ़ी काम-धंधे के लिये शहरों को पलायन कर गई है। यहाँ भी गाँव के आस-पास बड़ी तेजी से बंजर पसर रहा है जो खेती-बाड़ी दो पीढ़ी पहले तक आबाद थी वो अब बंजर होने लगी है। केवल महिलाऐं ही उत्पादक श्रमिक के रूप में गाँवों में मौजूद हैं और बच्चों का पालन-पोषण, जानवरों की देखभाल वृद्धजनों की देखभाल तथा खेती के कई काम उनके जिम्मे आ गये हैं।

पहाड़ के गाँव आज एक तरह की उदासी में डूबे नजर आते हैं। बाहर से हम गाँव को कितने ही रोमांचक ढंग से परिभाषित करें लेकिन बदलती जीवन शैली, रोजगार के बढते दबाव के लिये निरंतर पलायन, शराब तथा पंचायती राजनीति व जंगली जानवरों के आतंक ने गाँवों के जीवन को बुरी तरह से प्रभावित किया है। काण्डे गाँव से तीन किमी पैदल ही आश्रम तक पहुंचे। रास्ते में सुंदर गाँव जयंती मिला। वहाँ छिटपुट बात हुई। फिर से शानदार भोजन और गपशप के साथ आज का दिन पूरा हुआ।

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

–सम्पादक

मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-8

✍शंकर दत्त, श्रमयोग

खतरनाक जंगली जानवरों को पालतू बनाना एवं पेड-पौधों की खेती करना मानव के लिए इतना आसान नहीं था। यह एक जोखिम और समय लगाकर करने वाला कार्य था। हमारे पूर्वजों के तार्किक बुद्धि में यह बात आ गयी थी कि यह कार्य सिर्फ झुण्ड या समूह में रहकर ही सम्भव हो सकता है। अतः हमारे पूर्वजों ने समूहों में रहना शुरु किया। बुद्धिजिवियों ने यह घोषणा कर दी है कि कृषि क्रान्ति से लोग चतुर हो गये थे। वे प्रकृति के रहस्यों को जानकर उसमें ठीक से रच बस गये थे और जीवन बहुत ही आसान हो गया था। सेपियन्स को थकाउ जीवन से छुटकारा मिल गया था।

लेकिन आज के जीवन की समग्र गुणवत्ता देखकर आप कह सकते है कि यह एक झूठ था, कल्पना थी। भोजन खोजी मानव कृषि क्रान्ति से पहले भी तार्किक था। कृषि क्रान्ति ने एक असन्तोषी मानव को जन्म दिया, कृषि क्रान्ति ने त्वरित भोजन की मात्रा तो बढ़ाई। लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं था कि खाने की गुणवत्ता और जीवन में आराम बढ़ गया हो। बिल्कुल नही, कृषि क्रान्ति ने एक ही जगह पर जनसंख्या को बढाया और वर्ग बनाये।

अब बहुत मेहनत और संघर्ष से मानव क्या हासिल कर रहा था। बहुत सारा पोषण वाला भोजन और तनाव। ये सब किसने किया। मानव के इस कम गुणवत्ता जीवन के लिए जिम्मेदार कौन था। राजा? व्यापारी? या पुरोहित? कोई भी नहीं। ये सब वो कर रहे थे जिन पर मानव कब्जा करके खुशी मना रहा था। मनुष्य गर्व से इनके पालतू होने की बात बताता था।

मानव सोच रहा था उसने गेहू, चावल, आलू उगाकर और भेड-बकरी को पालतू बना कर आराम पा लिया है। लेकिन सच यह था कि इन परिस्थितियो ने भोजन खोजी मानव को आजाद व स्वछन्द प्रजाति से चन्द वनस्पतियों व पालतू पशुओं का गुलाम बना दिया था और उसमें असन्तोष बढ़ा दिया था।

किताब-'सेपियन्स' और 'आग से अन्तरिक्ष तक' पर आधारित

क्रमशः

ई-कचरा प्रबन्धन

एक कदम स्वच्छ पर्यावरण की ओर

ई-कचरा क्या है?

अनुपयोगी इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान जैसे कंप्यूटर, सी0पी0यू0, प्रिन्टर, की-बोर्ड, माउस, मोबाइल फोन, चार्जर, डिस्क, रेडियो, टेलीविजन, एयर कंडीशन, एल0ई0डी0 बल्ब इत्यादि ई-कचरा कहलाता है।

क्या आप जानते हैं?

हमारा देश अमेरिका, चीन, जापान व जर्मनी के बाद दुनिया का पॉचवां सबसे ज्यादा ई-कचरा पैदा करने वाला देश है। वर्ष 2019 में हमारे देश में 53.6 मिलियन टन ई-कचरा पैदा हुआ, जिसमें से सिर्फ17 प्रतिशत ई-कचरा ही रीसायकल किया जा सका। ई-कचरे का उचित प्रबन्धन न होने से यह न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, इससे मनुष्यों में स्वास्थ सम्बन्धी अनेक समस्याएँ भी पैदा होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वर्ष 2016 में ई-कचरे के प्रबन्धन के लिये दिशा निर्देश जारी किये, जिसमें सम्बन्धित पक्षों की निम्न जिम्मेदारियां तय की गई हैं।

ई-कचरे के बारे में सम्बन्धित पक्षों की जिम्मेदारियां

- ❑ किसी भी इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान के उत्पादक अपने उत्पाद के ई-कचरा बनने पर उसे उपभोक्ता से वापस लेंगे।
- ❑ इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान के दुकानदार अपने प्रतिष्ठान में ई-कचरा वापस लेने की व्यवस्था करेंगे व ई-कचरे के एवज में योजनानुसार उपभोक्ता को धनराशि का भुगतान करेंगे।
- ❑ क्लेक्शन सेन्टर उत्पादक, रीसायकलर अथवा डिसमेन्टलर की तरफ से ई-कचरा एकत्र कर सकेंगें व ई-कचरे का उचित मूल्य उपभोक्ता को देंगे।
- ❑ उपभोक्ता की जिम्मेदारी है कि ई-कचरे को क्लेक्शन सेन्टर में जाकर जमा करें।

हम अपने जिले को ई-कचरा मुक्त जिला बनायेंगे। इसलिये विकास खण्ड स्तर पर चार ई-कचरा क्लेक्शन सेन्टर खोले जा रहे हैं। आपसे निवेदन है कि आप अपना ई-कचरा क्लेक्शन सेन्टर पर ही दें एवं ई-कचरे का उचित मूल्य प्राप्त करें।

निवेदक

सोसायटी ऑफ पॉल्यूशन एवं एॅनवायरमेण्ट कन्जर्वेशन सांइटिस्ट्स

115, किशन नगर, देहरादून

टीकाकरण

कोविड से बचाव हेतु सबसे सुरक्षित हथियार

टीके की कार्य प्रणाली:

यह शरीर के अंदर रोगों से लड़ने वाली प्रक्रिया को बढ़ाता है एंव वायरस से लड़ने के लिए शरीर में एन्टीबॉडी बनाता है। टीकाकरण गंभीर संक्रमण से बचाव करता है। टीकाकरण से बड़ी संख्या में लोगों को कोरोना से बचाया जा सकता है।

टीकाकरण पश्चात लक्षण:

टीके से कुछ लोगों पर सामान्य सा रिएक्सन हो सकता है। जैसे बांह या सिर में दर्द होना, हल्का बुखार आना, ठंड, थकान या कमजोरी महसूस होना, सिर चकराना या मांसपेशियों में दर्द होना। परंतु यह सब थोडे समय में ही ठीक हो जाता है।

विशेष सावधानी:

ऐसे व्यक्ति जिन्हें पहले कभी रक्त श्राव की समस्या हुई हो, खून की कमी हो, किसी प्रकार का रक्त विकार हो या खून में प्लेटिलेट्स की संख्या कम हो उनको टीकाकरण के लिए किसी डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। आवश्यकता होने पर खून जाँच कराएं और उसके बाद डॉक्टर की सलाह के अनुसार टीका लगवाये।

कोरोना का टीका कब लगवाना चहिए:

- संक्रमित व्यक्तियों को ठीक होने का इंतजार करना आवश्यक है, संक्रमण में टीका लगवाना हानिकारक साबित हो सकता है। ठीक होने के 12 सप्ताह बाद ही टीका लगवाना सबसे उपयुक्त होता है।
- टीकाकरण दो बार करवाना होता है। पहले टीके के बाद 12 से 16 सप्ताह के बाद ही दूसरा टीका लगवाना चाहिए।
- यदि पहला टीका लगने के बाद संक्रमण हो जाता है तो ठीक होने के 12 सप्ताह बाद ही दूसरा टीका लगवाना चाहिए।
- महिलाओं को मासिक धर्म के समय या उसके तुरंत पहले या तुरंत बाद (2 से 3 दिन अंतर तक) टीका नहीं लगवाना बेहतर होता है। इस समय शरीर में कमजोरी महसूस होती है।
- गर्भवती महिलाओं को टीका नहीं लगाना चाहिए।
- स्तनपान कराती मातायें टीका लगवा सकती हैं।

जन जागरुकता अभियान

लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून

हमने 'प्रतिज्ञा' बाल मंच बनाया

मैं विकास रावत, ग्राम सभा थला मनराल का रहने वाला हूँ। हमारे गाँव में 21 अगस्त को 10 बच्चों का बाल मंच बना। बालमंच का गठन करने के लिए आसना दी आई थी।

बालमंच की शुरूआत आपसी परिचय से हुई और फिर बालमंच का नाम प्रतिज्ञा बाल मंच रखा गया। उसके बाद हमने पेड़ लगाने के लिए 4 गड्ढे तैयार किये। उसके अगले दिन शाम को 4 बजे आसना दी और विजय भैया ने पेड लगाने में हमारी मदद की। हमने गड्ढे में खाद डाली और बाँस की लकड़ियों से उसकी बाड़ की। हम सभी ने निर्णय लिया की हम पेडो की रक्षा करेंगे, क्योकि पेड़ हमारे सच्चे जीवन साथी होते हैं, पेड़ हमारे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं और हमें कई प्रकार के लाभ प्रदान करते हैं।

पेड लगाओं, पेड लगाओ,
हरा भरा, जीवन बनाओ।
छाया ये हमको देते है।
फल भी तो हमको देते हैं।
बाढ से हमको बचाते हैं।
प्रदूषण दूर भगाते हैं।
हम भी पेड लगाऐंगे।
संसार हरा भरा बनाऐंगे।

सद्भावना शिविर:एक उपयोगी आयोजन

रेनुका, बिरलगांव

उत्तराखण्ड सद्भावना समिति व सर्वोदय मण्डल, उत्तराखण्ड द्वारा 22 से 26 अगस्त तक अनासक्ति आश्रम, कौसानी में सद्भावना शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में हमारी टीम से कुछ साथियों के साथ मुझे भी जाने का अवसर प्राप्त हुआ। शिविर में प्रतिभागियों के साथ विभिन्न विषयों के जानकार एंव अनुभवी लोग भी उपस्थित रहे। जो उपस्थित नहीं हो पाये उनसे आनलाइन माध्यम से चर्चा की गयी। शिविर की शुरूआत परिचय से की गयी व परिचय में कुछ अन्य विषयों को भी शामिल किया गया, ताकि शिविर में आये लोग एक-दूसरे को अच्छी तरहे जान सके। दूसरे सत्रों में कई विषयों पर चर्चाएं चली। शिविर में युवाओं के साथ संवाद के लिए, कई मुद्दे शामिल रहे जैसे राष्ट्रीय आंन्दोलन, संविधान, लोकतंत्र, जल स्रोतों का संरक्षण, वन पंचायत, शिक्षा, पर्यावरण और विकास, बीज, पशुपालन व ग्रामीण जीवन, स्वास्थ्य और पलायन पर चर्चा की गयी।

चर्चा के दौरान शिविर में उपस्थित युवाओं ने शिक्षा, पलायन, ग्रामीण जीवन और जल स्रोतों पर ध्यान देते हुए कई प्रश्नों को चर्चा में रखा। वक्ताओं का कहना था कि आजकल के बच्चों पर शिक्षा का अधिक दबाव पड़ने पर बच्चे नशे की ओर जा रहे हैं। पलायन भी आजकल के युवाओं के लिए भारी चिंता का विषय है। गांवों में रहने वाले युवाओं और बच्चों को पलायन के ओर बढ़ने से रोकने के लिए प्रयत्न किया जाना चाहिए। युवाओं को गांव में स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। जल स्रोतों पर भी बात की गई। कहा गया कि जलाशयों में पानी लगातार कम होने की समस्या उभरकर आ रही है, जिसका मुख्य कारण जंगलों में आग का लगना है। खेती बंजर होने को भी जल स्रोतों के सूखने का कारण बताया गया। वन आंदोलन पर विस्तार से चर्चा की गयी।

कुल मिलाकर यह एक अच्छा कार्यक्रम रहा। मैं ऐसे कार्यक्रमों में फिर शामिल होना चाहुंगी।

हमारा पेड हमारी जिम्मेदारी

प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान के तहत श्रमयोग के कार्यक्षेत्र अल्मोड़ा जिले के सल्ट विकास खण्ड के अलग-अलग गाँवों में बाल मंचों का गठन किया गया है। प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान का उद्देश्य बच्चों में पर्यावरणीय व वैज्ञानिक चेतना का प्रसार-प्रचार करना हैं। इसके अन्तर्गत मई माह में चार दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें बच्चों ने एक वार्षिक कैलेण्डर तैयार किया था। कैलेण्डर में बच्चों द्वारा अगस्त से दिसम्बर माह तक की मासिक गतिविधियाँ तय की गई थी। जिसमें बच्चों ने यह तय किया था कि अगस्त माह में वृक्षारोपण का कार्य किया जायेगा। इस क्रम में अगस्त माह के शुरूआत में तल्ली नदोली, मल्ली नदोली, थला तडियाल व थला मनराल में बाल मंचों की मासिक बैठको का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रमों को लेकर चर्चा की गई। मासिक बैठको में सभी बच्चों ने मिल कर कटहल, जामुन और अमरूद के पेड़ लगाने की बात कही। जिसके लिए पहले बच्चो द्वारा सर्वसहमती से जगह का चुनाव किया गया, हर गॉव में गड्ढे तैयार किये गये, और खाद डाली गई। तत्पश्चात 22 अगस्त को बच्चों द्वारा वृक्षारोपण किया गया, और पौधों की घेर बाढ़ की गई। बच्चों द्वारा पौधों की सुरक्षा के लिए नियम भी बनाये गए हैं। उसके बाद बच्चो द्वारा 'हमारा पेड़, हमारी जिम्मेदारी' नारे के साथ संकल्प लिया कि हम सभी बच्चे इन पौधों की पूरी सुरक्षा करेंगे। आसना

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)